RESEARCH HUB – International Multidisciplinary Research Journal (RHIMRJ)
Research Paper
Available online at: www.rhimrj.co.in

'अज्ञेय' की 'विपथगा' अर्थात् मेरिया इवानोव्ना की कहानी

डॉ० किरण कुमारी

असिस्टेन्ट प्रोफेसर, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, डोरण्डा महाविद्यालय,राँची

पूर्व अवधारणा :–

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' विलक्षण प्रतिभा के धनी साहित्यकार हैं। उनका समस्त जीवन युगीन विद्रोह का प्रतीक है जो उनकी रचनाओं में प्रतिफलित हुआ है। त्रिभुवन सिंह लिखते हैं–''उपन्यास, कविता और कहानी सभी क्षेत्रों में 'अज्ञेय' की प्रतिभा ने अपना चमत्कार दिखाया है। 'अज्ञेय' जी की साहित्यिक उपलब्धियों को देखते हुए यह निःसंकोच कहा जा सकता है कि उन्होंने साहित्य की सभी प्रमुख विधाओं को नवीन मोड़ दिया है। इन्होंने घटना प्रधान कहानियों को चरित्र प्रधान कहानियों का स्वरूप प्रदान किया।''[1] चरित्रों के अन्तर्द्वन्द्वों का चित्रण मनोविश्लेषण और चिन्तन के आधार पर पहली बार विश्वसनीय रूप से 'अज्ञेय' की कहानियों में देखने को मिला। नारी के प्रताड़ित जीवन का सजीव चित्रण 'अज्ञेय' ने किया है। अभाव पीड़ित नारी के विद्रोही भावों के प्रति सहानुभूति उत्पन्न करना 'अज्ञेय' की कहानी–कला की सबसे बड़ी शक्ति है। अज्ञेय के कहानी संग्रह हैं– विपथगा–1937, परम्परा–1944, कोठरी की बात–1945, शरणार्थी–1948, जयदोल–1951.

अध्ययन का उद्देश्य :–

'विपथगा' हिन्दी के बहुचर्चित कवि और कथाकार सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय की आरम्भिक कहानियों में से एक है। इस नाम से इनका पहला कहानी–संग्रह भी प्रकाशित हुआ। तब इन कहानियों की प्रशंसा में पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी ने कहा था–'(इस संकलन की) प्रत्येक कहानी में वह ('अज्ञेय') विद्यमान हैं एक ऐसे युवक के रूप में, जिसमें उत्साह है, दृढ़ता है, आदर्श के लिए मर मिटने की चाह है, जो हथेली पर जान रखकर उस पर प्रयोग करने में आनन्द लेता है, पर जिसमें विवेक का अभाव है जो बेजान बुढ्ढे आदमियों को मयस्सर होता है। उस हिसाबीपन की कमी है जिस पर दुनियावी आदमी अभिमान किया करते हैं और फूँक–फूँक कर कदम रखने की उस प्रवृत्ति का नामोनिशान नहीं जो हाथ–पाँव बचाकर मूँजी को तरकाने वाले आदमियों में पाई जाती है।' इस कहानी का उद्देश्य क्रांतिकारियों के प्रति सहानुभूति उत्पन्न करता है।

अध्ययन का महत्त्व :–

चतुर्वेदी जी के इस वक्तव्य की आलोचना करते हुए हिन्दी के समकालीन कहानी–आलोचक मधुरेश ने लिखा है –''बलिदान का हौसला सचमुच बड़ी बात है, लेकिन समझ और विवेक को केवल बूढ़ों के खाते में डाल देनेवाली बात भावुकता के तर्क का हिस्सा बनकर आई है। क्रान्तियों का इतिहास इस बात का साक्षी है कि तर्क और विवेक से वंचित यह अतिरेकी विस्फोटक उत्साह अपनी प्रवृत्ति में रोमानी होने के सबब से, समूची क्रान्ति और उसके महत् उद्देश्यों के लिए प्राणघाती साबित हुआ है।'' एक ऐसे ही बलिदान पर टिप्पणी करते हुए 'शेष प्रश्न' की कमल ने कहा था कि अज्ञान की बलि इसी प्रकार होती है। हर क्रान्ति के साथ आतंकवाद उस क्रान्ति के एक जरूरी हिस्से की तरह हमेशा ही जुड़ा रहा है, लेकिन लेनिन ही नहीं, उनके दूसरे समानधर्मियों को भी इस बात को समझने में देर नहीं लगी थी कि आतंकवाद क्रान्ति के लिए एक सीढ़ी भले हो, वह सम्पूर्ण क्रान्ति नहीं है।

परिकल्पना :–

राजेन्द्र यादव लिखते हैं–''अज्ञेय ने विशिष्ट व्यक्ति की स्थापना से कहानी लिखना प्रारंभ किया था तो उससे अलग जैनेन्द्र ने सामान्य व्यक्ति से।''[2] यशपाल ने भी अपने आरम्भिक दौर की रचनाओं में क्रान्ति की इस अनुभवसिद्ध पृष्ठभूमि का इस्तेमाल केवल 'दादा कामरेड' में किया है और वहाँ भी उनका उद्देश्य आतंकवाद की भाव–विह्वल स्तुति न होकर उस क्रान्तिकारी संक्रमण को अंकित करना है जो तत्कालीन क्रान्तिगामी चेतना को आतंकवाद की संकीर्णताओं से मुक्त करके जनवादी–समाजवादी क्रान्ति की ओर अग्रसर कर रहा था।

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved

'विपथगा' अज्ञेय की क्रान्ति के समर्थन में लिखी हिन्दी की बहुचर्चित कहानी है। उन्होंने इस तरह की और भी कई कहानियाँ लिखी हैं; यथा, 'हारिति', 'अकलंक' और 'द्रोही'। इन कहानियों में अज्ञेय ने बड़े आवेग और सरल ढंग से क्रान्ति के लिए मर मिटने वाले लोगों के प्रति अपनी सहानुभूति और संवेदना प्रकट की है। जैनेन्द्र की भावुकतापूर्ण शैली को 'अज्ञेय' ने 'चिन्तन' का ठोस धरातल प्रदान किया है। अज्ञेय की कहानियों को 'सोद्देश्य सामाजिक आलोचना सम्बन्धी, राजनीतिक बंदी सम्बन्धी, चरित्र–विश्लेषण सम्बन्धी और प्रतीकों के सहारे मानसिक अध्ययन सम्बन्धी, चार वर्गों में विभक्त कर सकते हैं। इनकी चरित्र प्रधान कहानियाँ बहुत अच्छी बन पड़ी हैं। ''चरित्रों की अवतारणा 'अज्ञेय' जी ने 'अहं' विद्रोहात्मक एवं विश्लेषणात्मक तत्त्वों के आधार पर की है। कथात्मक आत्मकथात्मक, नाटकीय, पत्रात्मक, प्रतीकात्मक तथा मिश्रित आदि विविध शैलियों का सफल निर्वाह भी 'अज्ञेय' की कहानियों में देखने को मिला।''[3] कहानी लेखन तो इन्होंने सन् 1924 ई0 में ही प्रारम्भ कर दिया था पर अव्यवस्थित क्रान्तिकारी जीवन जीने के कारण उसे व्यवस्थित रूप बाद में ही दे सके। 'विपथगा' कहानी संग्रह की कहानियों में पुरुष भी हैं और स्त्रियाँ भी, किन्तु उनके चरित्र पूर्णतः रोमानी, भावुक और आदर्शवादी हैं। ऐसी कहानियों पर लगाये गये भावुक आदर्शवाद के आरोप का उत्तर देते हुए अज्ञेय ने लिखा है '... ..... पर उस समय के क्रान्तिकारी आदर्शवादी थे, आदर्शवादी होते थे और आदर्शवादी होना गौरव की बात समझते थे। अगर उस काल के आदर्शवाद में रोमानी भोलापन भी झलकता है तो वह वास्तविक स्थिति का ही प्रतिबिम्ब है : आतंकवादी आंदोलन में एक रोमानी भोलापन था और उनमें से कोई भी तब रोमानियत या भोलेपन के आरोप पर लज्जित न होता। वे भी नहीं, जिन्होंने अनन्तर रोमानियत विरोधी मोहभंग की मुद्राएँ अपनायीं।'

तात्पर्य यह कि 'विपथगा' में अज्ञेय ने स्वच्छन्द भावधारा का अनुसरण करते हुए भी तत्कालीन मानसिकता के आधार पर क्रान्ति को समर्थन दिया है। इसकी कथावस्तु रूसी क्रान्ति को आधार बनाकर प्रस्तुत की गई है, जिसके अन्तर्गत एक युवती क्रान्तिकारिणी (मेरिया इवानोव्ना) के अभूतपूर्व त्याग का दृष्टान्त उपस्थित किया गया है।

'विपथगा' कहानी में मुख्यतः दो ही पात्र हैं–एक, स्वयं कथाकार, जो इतिहास के अध्यापक के रूप में पाठकों के समक्ष उपस्थित होता है; दूसरी, मेरिया इवानोव्ना, जिसे क्रान्ति की ज्वाला में अपना सर्वस्व जलाकर राख बना देना होता है। समूची कथा फ्लैश बैक टेकनीक (पूर्व दीप्ति की पद्धति) का सहारा लेकर कही गई है। प्रोफेसर महोदय पेरिस में निर्वासित जीवन व्यतीत करते हुए क्रान्ति जैसे विषय पर अक्सर भाषण दिया करते हैं। सिनेमा, थियेटर अथवा कविता जैसे मनोरंजन के साधनों में आस्था न होने के कारण वे अपने मनोरंजन के लिए अक्सर देश–विदेश की क्रान्तियों का इतिहास पढ़ लिया करते हैं। इससे अधिक कभी कुछ करते हैं तो पुराने अस्त्र–शस्त्रों के संग्रह में लग जाते हैं। उनके इसी सुकर्म का परिणाम है कि उनके कमरे में एक टूटी हुई तलवार पड़ी है जिसे देखकर अक्सर उन्हें बीते दिनों की घटनाएँ याद आने लगती हैं। ठीक स्मृतिनिर्भर कल्पना के ढंग पर यह कहानी कही गई है।

टूटी हुई तलवार को देखकर लेखक को उस रात की घटना याद आती है जब मास्को की सर्दियों में एक क्रान्तिकारिणी उसके कमरे में घुस आई थी और अनेक घटनाओं के घात–प्रतिघात से युक्त इस कहानी की कथावस्तु दे गई थी। मेरिया इवानोव्ना के दो नाम और थे। एक उसके पिता द्वारा प्रदत्त जो उसकी शादी के बाद भुला दिया गया और दूसरा उसके क्रान्तिकारिणी बनने के बाद। लेखक ने बड़ी कुशलता के साथ स्वयं मेरिया इवानोव्ना के मुख से ही उन घटनाओं का जिक्र किया है, जिसके अन्तर्गत उसे क्रान्तिकारिणी के रूप में अपने को प्रमाणित करने के लिए पिता की हत्या करनी पड़ी। कारण मेरिया जिस परिवार से अकेले क्रान्तिकारिणी बन गई थी, उसमें कोई भी उसके प्रति सदय नहीं था। पिता पीट्र्सवर्ग में पुलिस विभाग के सदस्य थे और पति भी राजनैतिक विभाग में सक्रिय थे।

एक क्रान्तिकारिणी के रूप में परीक्षा दे चुकने पर मेरिया ने किस तरह क्रान्तिदल के नेता माइकेल क्रेस्की को पुलिस से बचाने के लिए अपना शील दाँव पर लगा दिया–इस घटना का अत्यन्त हृदयस्पर्शी वर्णन 'अज्ञेय' ने इस कहानी में किया है। इसे पढ़कर इसी कहानी के पात्र प्रोफेसर की तरह पाठक के मन में भी क्रान्तिकारियों के प्रति प्रगाढ़ श्रद्धा उत्पन्न होती है।

'विपथगा' कहानी का प्रारम्भ इस वाक्य से होता है–'वह मानवी थी या दानवी, यह मैं इतने दिन सोचकर भी नहीं समझ पाया हूँ.....।'[4] इसका अन्त भी लगभग ऐसी ही पंक्ति से होता है–''मेरिया इवानोव्ना, तुम मानवी थी या दानवी, या स्वर्गभ्रष्टा विपथगा देवी।''[5]

ऐसा प्रतीत होता है कि 'विपथगा' का शिल्प एक प्रगीत कथा का शिल्प है–ठीक जयशंकर प्रसाद की कहानी 'गुण्डा' की तरह वृत्ताकार : कथाकार जहाँ से शुरू होता है, वहीं समाप्त करता है। सम्पूर्ण कहानी के केन्द्र में मेरिया इवानोव्ना है अर्थात् मूल कथा का प्रत्यक्ष सम्बन्ध मेरिया से है, जबकि प्रासंगिक कथा का सम्बन्ध प्रोफेसर से है। कहानी में पूर्वदीप्ति पद्धति का बड़ा ही प्रभावशाली उपयोग किया गया है। हिन्दी कहानी–साहित्य के इतिहास में संभवतः इस शैली का पहला समर्थ प्रयोग पं० चन्द्रधर शर्मा गुलेरी ने अपनी कहानी 'उसने कहा था' में किया था। इस शैली पर अज्ञेय ने मानो अपना हस्ताक्षर कर दिया है।

'विपथगा' कहानी का परिवेश विदेशी है। इसे पढ़कर यह साफ हो जाता है कि 'अज्ञेय' ने अपने क्रान्तिकारी जीवन में, जेल में और जेल के बाहर देश–विदेश के क्रान्तिकारियों की जीवनियाँ पढ़ी होंगी और इस उद्देश्य के लिए, निष्ठा और भावना की पुष्टि के लिए 'विपथगा' जैसी रोमानी और आदर्शवादी कहानियाँ लिखी होंगी।

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved

ISSN: 2349-7637 (Online)

'विपथगा' में घटनात्मकता का अभाव नहीं है, तथापि यह कहना अधिक सही होगा कि यह एक चरित्र–चित्रण प्रधान कहानी है। लेखक अपनी ओर से ही प्रोफेसर और मेरिया इवानोव्ना दोनों का विस्तार में चरित्र–चित्रण करता है। प्रोफेसर स्वयं अपने बारे में कहता है–''मैं भावुक प्रकृति का आदमी नहीं हूँ। पुराने फैशन का एकदम साधारण व्यक्ति हूँ। मेरी जीविका का आधार इसी पेरिस शहर के एक स्कूल में इतिहास के अध्यापक का पद है। मैं सिनेमा–थियेटर देखने का शौकीन नहीं हूँ, न मेरा कविता में ही मन लगता है। मनोरंजन के लिए मैं कभी–कभी देश–विदेश की क्रान्तियों का इतिहास पढ़ लिया करता हूँ। एक–आध विषय पर व्याख्यान भी दिये हैं। जब पढ़ने से मन उकता जाता है, तब कभी–कभी पुराने अस्त्र–शस्त्र के संग्रह में लग जाता हूँ।'[6]

इसी तरह मेरिया भी अपने बारे में कहती है–''मैंने घर में आराम कुर्सी पर बैठकर यन्त्रालयों में पिसते हुए श्रमजीवियों के लिए साम्यवाद पर लेख नहीं लिखे हैं। न मैंने मंच पर खड़े होकर कृषकों को जबानी स्वातंत्र्य युद्ध की मरीचिका दिखलाई। मैंने बार–बार माता–पिता, पति तक को छोड़कर धक्के ही धक्के खाये हैं। सौभाग्य बेचकर अपने विश्वास की रक्षा की है।''[7]

इन उद्धरणों से पता चलता है कि संवाद–शैली का चतुराई से उपयोग करते हुए इस कहानी में पात्रों का प्रभावशाली चरित्रांकन किया गया है।

ऊपर कहा जा चुका है कि 'विपथगा' की अन्विति प्रगीतात्मक है। निश्चय ही इस प्रगीतात्मक अन्विति के मूल में अज्ञेय की भाव प्रवण भाषा–संरचना है। एक आलोचक के शब्दों में 'अज्ञेय' की कथा–भाषा, व्यक्ति–संवेदन और युग–संवेदन से एकतान, आत्म और कलेवर में परस्पर प्रतिच्छायित भाषा है, जो अधिकाधिक प्रयोगी, सर्जनात्मक महीन और अर्थगर्भी है। प्रस्तुत कहानी में प्रोफेसर के लिखित भाषण का यह अंश पर्याप्त काव्यात्मक है–

दीप बुझता है तो धुँआ उठता है। किन्तु हमारे विस्तृत देश के भूखे, पीड़ित अनाश्रित कृषक–कुटुम्ब सड़कों पर भटक–भटक कर हिमावृत धरती पर बैठकर अपने भाग्य को कोसने लगते हैं। जब उनके हृदय में सुरक्षित आशा की अन्तिम दीप्ति बुझ जाती है, तब एक आह तक नहीं उठती।'[8]

कहानी की निम्नलिखित पंक्ति में लेखक एक तरह से क्रान्ति की परिभाषा ही दे रहा है–'' सफल क्रान्ति क्या है? असंख्य विफल जीवनियों का असंख्य निष्फल प्रयत्नों का, असंख्य विस्मृत आहुतियों का, अशान्तिपूर्ण किन्तु शान्तिजनक निष्कर्ष।''[9]

'विपथगा' कहानी में इस वक्तव्य की आवृत्ति भी हुई है। वस्तुतः 'अज्ञेय' एक प्रभावशाली कहानीकार होने पर भी मूलतः कवि ही हैं। वैसे, उपर्युक्त उद्धरण की आवृत्ति गद्य की लय को और अधिक प्रवाह देने के लिए ही हुई है। कहानी की परिभाषा देते हुए हडसन ने जो कुछ कहा है, वह इस कहानी के संदर्भ में बिल्कुल सटीक है–

> "A short story must contain one and only one informative idea, and that the idea must be cooked out to its logical connections with absolute singleness of aim and directness of method. "

निष्कर्ष :–

अतः यह कहा जा सकता है कि 'विपथगा' कहानी में अज्ञेय ने कहानीपन का आभास बनाये रखते हुए भी सूच्य विचार को संश्लिष्ट अभिव्यक्ति दी है। ऐसा करते हुए उन्होंने पर्याप्त कुतूहल और जिज्ञासा भी पाठक के मन में बनाये रखने में सफलता पाई है। अन्य अनेक कहानियों की तरह 'विपथगा' पर भी 'अज्ञेय' के व्यक्तित्व की सुस्पष्ट छाप परिलक्षित होती है। इस कहानी का उद्देश्य क्रान्ति के विपथगा–स्वरूप का समर्थन और साक्षात्कार है। लेखक यह प्रस्तावित करता है कि क्रान्ति जब घटित होती है, तब यह आवश्यक नहीं कि उसका परिणाम हमेशा अच्छा ही हो। वस्तुतः यह एक अनिवार्य प्रक्रिया है जिससे कोई भी समाज–व्यवस्था बच नहीं सकती। कथ्य और शिल्प दोनों ही दृष्टियों से 'विपथगा' 'अज्ञेय' की आरंभिक कहानी होकर भी उत्कृष्ट स्थापत्य का संकेत देती है। अज्ञेय ने एक दृढ़, निर्भीक, अडिग और यायावर नायक ही हिन्दी–कहानी को नहीं दिया, उनके विशिष्ट व्यक्तित्व के अनुरूप भाषा की संयत–गरिमा, शैली की परिनिष्ठित भंगिमा, शब्दों को सूक्ष्म अर्थ–संस्कार और शिल्प को गम्भीर सार्थक तराश भी दी है। उनके एक–एक शब्द, यहाँ तक कि विराम–चिह्न, एक पंक्ति और एक स्थिति को इधर से उधर नहीं किया जा सकता। मन के जटिलतम स्तरों, संश्लिष्ट मनोभावों को भाषा द्वारा सम्प्रेषित करने के प्रयत्न में उन्होंने उसे विलक्षण अभिव्यंजना दी है।

संदर्भ सूची :–

1. सं. त्रिभुवन सिंह, आधुनिक साहित्यिक निबन्ध, रत्ना पब्लिकेशन्स, कमच्छा, वाराणसी, तृतीय सं. 1998, पृ0सं0–148
2. राजेन्द्र यादव, कहानी स्वरूप और संवेदना, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद–3, तृतीय संस्करण 1988 पृ0सं0–29.
3. सं. त्रिभुवन सिंह, आधुनिक साहित्यिक निबन्ध, रत्ना पब्लिकेशन्स, कमच्छा, वाराणसी. तृतीय सं. 1998, पृ0सं0–149.

4. सं. जैनेन्द्र कुमार, 23 हिन्दी कहानियाँ (साहित्य अकादमी की ओर से) लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद–1 ग्यारहवाँ संस्करण, 1984, पृ0सं0–188.
5. वही, पृ0सं0–207
6. वही, पृ0सं0–188
7. वही, पृ0सं0–194
8. वही, पृ0सं0–189
9. वही, पृ0सं0–190